नई दिल्ली, गुरुवार
12 अप्रैल 2018
नोएडा
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 16+8=24

दैनिक जागरण

उपराष्ट्रपति ने देश को आगे ले जाने के लिए किया प्रेरित

बिमटेक के दीक्षा समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे वेंकैया नायडू

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा : बिरला इंस्टीट्यूट आफ मैनेंजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) के 30वें दीक्षा समारोह का आयोजन बुधवार को इंडिया एक्सपो मार्ट परिसर में किया गया।

इसमें विभिन्न संकाय के करीब 423 विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर डिप्लोमा से सम्मानित किया गया। उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू व बिमटेक की चेयरपर्सन जयश्री मेहता समेत निदेशक हरिवंश चतुर्वेदी व आबकारी मंत्री जय प्रताप सिंह ने दीक्षांत समारोह का शुभारंभ दीप जला कर किया। कलाकृति स्कूल के बच्चों ने कार्यक्रम के शुभारंभ से पहले सरस्वती वंदना का पाठ किया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों से उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने कहा भारतीय सभ्यता सबसे महान व पुरानी है। इसमें कई विलिधताएं हैं। इन्हीं विविधताओं में एकता का संदेश देने वाला मेरा भारत महान है। आपसी भाईचारे को एक सूत्र में बांध कर आगे बढ़ने वाला देश आज भी विश्व गुरू है। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने शैक्षणिक सत्र 2016-18 के विद्यार्थियों को डिप्लोमा व स्वर्ण पदक देकर शिक्षा के साथ कार्यक्षेत्र में भी निपुणता हासिल करने व देश को आगे ले जाने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान बिमटेक के निदेशक डा. हरिवंश चतुर्वेदी ने संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुतकर विद्यार्थियों की उपलब्धियां गिनाई। कार्यक्रम में पीजीडीएम में पहले स्थान प्राप्त करने वाले आदित्य वर्द्धन, पीजीडीएम आइबी में शल्लिका सिंह, पीजीडीएम बीएम यशस्वी अग्रवाल, पीजीडीएम आरएम प्रवीण कुमार-ए को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इसके अलावा पीजीडीएम में विपणन स्ट्रीम में प्रथम स्तान पाने वाली सोनाली गुप्ता, पीजीडीएम आपरेशंस में रोसी सारा थॉमस को से सम्मानित किया गया।

दीक्षा समारोह में छात्रा को उपाधि देते उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू ● राजेश गौतम

कठिन परिश्रम ही सफलता का मूल मंत्र

जासं, ग्रेटर नोएडा : कठिन परिश्रम को उन्होंने सफलता का मूलमंत्र बताया। पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उदाहरण देते हुए कहा कि दोनों ने साधारण परिवार में जन्म लेने के बाद कठिन परिश्रम से देश में सर्वोच्च पद हासिल किया। खुद का उदाहरण देते हुए कहा कि वह नेल्लौर के एक सामान्य किसान परिवार से हैं, उनके परिवार में कोई भी शिक्षित नहीं था और न ही कोई राजनीति में था। इसके बाद भी वह आज देश के दूसरे सर्वोच्च संवैधानिक पद पर विराजमान है। मातृभाषा का हर हाल में हो सम्मान : मातृ भाषा पर जोर देते छात्रों से उपराष्ट्रपति ने कहा कि हमें मातृभाषा का हर हाल में सम्मान करना चाहिए। उन्होंने रूस, चीन, फ्रांस समेत अन्य देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि इन देशों के प्रमुख जब भारत आते हैं तो ज्यादातर अपनी मातृभाषा में ही बात करते हैं। इसका मतलब ये नहीं है कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती बल्कि वे अपनी मातृभाषा से प्यार करते हैं।

पूर्व राष्ट्रपति से सीखने की दी प्रेरणा

उपराष्ट्रपति ने छात्रों को योग का महत्व बताया और कहा कि स्वस्थ नागरिकों से ही स्वस्थ देश का निर्माण संभव है। अंत में उन्होंने छात्रों को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की सूक्ति से प्रेरणा लेने की सीख देते हुए कहा कि अगर आप कठिन परिश्रम करने में यकीन रखेंगे तो आपके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।